सफलता की कहानी –

ग्रामीण महिलाओं का वनोपज संग्रहण कर आत्मनिर्भरता की ओर पहला कदम

रिंगनिया/चेहरे पर चिन्ता,तनाव व कर्जे का बोझ यहीं मेरे गांव की पहचान बनती जा रही थी। रोज सुबह उठकर कांधे पर छोटी मगर धारदार मजबूत कुल्हाड़ी एक की वार में मोटे से मोटे झाड़ –झंखाड़ .को काटने का मांदा रखने वाली औजार की भी धार मंद होने लगी थी। हर समय एक ही चिन्ता क्या कभी हमारे भी अच्छे दिन आयेंगे।

तभी एक दिन गांव के चौपाल में कुछ महिलाए एवं पुरूषों की जमघट लगी थी,दूर से ही खड़े–खड़े मे सोच रही थी जरूर गांव मेंफिर कोई शराबी घर में मार पीट किया होगा जिसके लिए फरियादी की समस्या के हल के लिए गांव के लोग इक्कठा हुए होंगे।मै बार–बार उत्सुक्ता वश कमजोर ऑखों को जोर दे कर देखने की कोशिश कर रही थी । दो अजनबियों के बीच गोल घेरे में कुछ लोग बैठे आपस में बात कर रहे थे और बीच –बीच में हुॅकारू भर रहे थे ।मै भी अपने आप को वहां जाने से रोक नहीं पायी ,सबसे पीछे जा कर बैठ गई मानो जैसे किसी की नजर मुझ पर न पड़ी हो धीरे–धीरे उनकी बातों को समझने की कोशिश कर रही थी '' जंगल आपका है इस जंगल पर जंगल में रहने वाले लोगों का अधिकार है,जंगल में होने वाले उपज पर भी हमारा अधिकार है' जैसे बातों पर मंद–मंद मुस्कुराने लगी और अपने आप में ही बुदबुदाने लगी – ये लोग शहर से आये है जंगल –वंगल के बारे में कुछ नहीं जानते है,हम लोग तो दादा–परदादा कई पीड़ियों से देखते आ रहे है ''हाथ में डण्डा लिए खादी ड्रेस में पहने पुलिस वाले के बिना हम लोग एक डंगाल नहीं ला पाते '' ये बड़ा जंगल में हमारा अधिकार है बता रहे है।

तीसरे दिन जंगल में सूखी लकड़ी बिनते–बिनते मालती पीछे से आवाज देते हुए बोलती है मानकी ,महुआ,चार ,बीज जतका वनोपज हे ओमा हमर अधिकार हे कुछू समझ म आईसे का'' मालती बहन जंगल ह हमर नहीं वन, वन विभाग के आये ,देखत नई–अच कि पूरा जंगल ल चारो डहर तार के बाड लगा के घेर डारे हे हमन ल तरिया–नदिया आउ बाहिर कोति जाये बर भी रददा नईये ! चल बहिनी घर बेरा होवथे लइका मन भूखाये होही।

दो माह बाद मालती बहन '' हमन वन अधिकार कानून अउ वन उपज संरक्षण के परशिक्षण के बाद हमन आज हमर संगठन के मन वन उपज के खरीददारी कर इक्कठठा करे हन बाद म बेच कर पैसा बनाबो''हॉ मानकी दीदी हमन ल भी विस्तार से बता हमु मन

संगठन बनाके अपन अधिकार अउ जंगल के उपज म हमर हक ल लेबो।

मानकी दीदी विस्तारपूर्वक बताते हुए कहती है – हम गांव के लोग वन कानून व सामुदायिक वन अधिकार के बारे में नहीं जानते थे । एक दिन संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने हमें जानकारी दी । तब हम लोगों ने अपने मोहल्ले में जंगल को संरक्षित करने लिए बैठक लिए । इस कानून को विस्तार से जानने दो–तीन बार प्रशिक्षण में भी गये । हम लोग अपने गांव के बाहर कभी नहीं गये थे । राजधानी रायपुर में तीन दिन के प्रशिक्षण में एहसास हुआ कि हम लोग मिल कर ही अपने वनों को संरक्षित कर साल भर वन उपज से ही अपना आर्थिक मदद कर सकते है । आत्म विश्वास और दढ़निश्चय के साथ हम लोगो ने निर्णय लिया कि इस वर्ष गर्मी के समय में मंहुआ फूल की खरीददारी कर उसको इक्कठठा करेगे। हमारे यहां प्रतिवर्ष प्रत्येक परिवार मंहुआ फूल इक्कठठा कर 20-25हजार रूपये की आमदनी करता है ।मंहुआ फूल को सुखा कर चार–पांच माह के लिए रख लिया जाता है उसके बाद उसका आसवन विधि द्वारा शराब बना कर ग्रामीण जन अपने सभी धार्मिक एवं सामाजिक समारोह में जम कर उपयोग करते है । सरकार द्वारा आदिवासियों को प्रति परिवार 5 लीटर तथा शादी समारोह या अन्य धार्मिक व सामाजिक कृत्य में 25 लीटर तक छूट प्रदान की गई है। ग्रामीण जन गर्मी के समय मंहुआ फूल को सूखा कर उसे स्थानीय दुकानदार को 15–20 रूपये प्रति किलों की दर से बेच देते है और यही दुकानदार से चार माह बाद उसी मंहुआ फूल को 34–40 रूपये प्रति किलों की दर से खरीदते है ।

शुरू में हम लोगों को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि हम लोग भी कभी ऐसा कर सकते है । आज हम लोग सभी 15 सदस्य बैठक करते है और गांव के विकास के लिए चर्चा कर उस पर कृियान्वयन करते है। विश्वास व संगठन की एकता से ही आर्थिक विकास की ओर हमारा पहला कदम है।

श्रीमती मानकी बाई